

## भारत दुर्दशा : नवजागरण

सिमरन शर्मा

किरोड़ी मल कॉलेज

दिल्ली विश्वविद्यालय

### सार

भारतेन्दु उस संक्रान्ति काल की उपज थे जिसमें पारम्परिक सामाजिक ढांचा टूट रहा था और नयी विचारधारा जन्म ले रही थी। भारतेन्दु की विचारधारा का संबंध राजनीतिक-सामाजिक जागरण के साथ, समाज कल्याण और उन्नति पर आधारित था। भारतेन्दु 'भारत दुर्दशा' नाटक के माध्यम से परिवर्तन चाहते थे। भारतेन्दु का सम्पूर्ण साहित्य परिवर्तन का आकांक्षी है। भारत दुर्दशा में नवजागरण की चेतना है, क्योंकि पाठक और दर्शक को चिंतनशील बनाता है 'भारत की दुर्दशा के प्रति' जिसमें भारतेन्दु सफल रहे हैं। उन्होंने राष्ट्रीय हितों को व्यक्तिगत/संकीर्ण हितों से ऊपर रखा है।

**बीज शब्द** — साहित्य में भारतेन्दु का महत्त्व, भारत दुर्दशा और नवजागरण की चेतना, नाटक के तत्वों के आधार पर भारत दुर्दशा की लघु समीक्षा, भारत दुर्दशा में राष्ट्रीय भावना।

आज भी भारतेन्दु को एक नये युग निर्माता के रूप में याद किया जाता है। भारतेन्दु ने जीवन और साहित्य के बीच के विच्छेद को दूर किया। वह नाटक के माध्यम से जन-जन तक पहुँचे हैं। उसमें से उनका एक नाटक है, 'भारत दुर्दशा' जो भारतेन्दु की विचारधारा और सामाजिक दृष्टि का प्रतिनिधि नाटक है। राष्ट्र के प्रति वफादारी उनके संपूर्ण साहित्य में नज़र आती है। भारत के प्रति गर्व भावना, राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति चिंता का भाव ही नहीं अपितु सक्रियता भी नज़र आती है। सबसे महत्वपूर्ण बात भारतेन्दु ने हिन्दी नाटकों को पहली बार साहित्यिक और रंगमंचीय विशेषताओं से सम्पन्न किया है। उनका साहित्य मानव को समाधान की दिशा में लेकर जाता है।

### 1. भारत दुर्दशा और नवजागरण की चेतना

नवजागरण का शाब्दिक अर्थ है — नए प्रकार से जागना। दो संस्कृतियों के मिलने से उत्पन्न होने वाली रचनात्मक ऊर्जा को ही नवजागरण कहा जाता है। जब संस्कृतियाँ एक-दूसरे के संपर्क में आती हैं तो स्वाभाविक तौर पर दूसरों की तुलना में अपना मूल्यांकन करती हैं और अपनी कमजोरियों को पहचान कर दूर करना चाहती हैं। आत्ममूल्यांकन, आत्म आलोचना तथा आत्मपरिष्करण की इस प्रक्रिया को नवजागरण कहते हैं, जिसके सबसे बड़े साक्षी भारतेन्दु युग के लेखक रहे हैं। भारतेन्दु ठीक उस समय के लेखक हैं जब पश्चिम की भौतिकवादी संस्कृति भारत की आध्यात्म प्रधान संस्कृति के

सामने खड़ी थी और दोनों संस्कृतियाँ एक-दूसरे को जिज्ञासा, विस्मय और संदेह के भाव से देख रही थी। भारतेन्दु ने नाटक में अंग्रेजी ढंग से सजे हुए कमरे का दृश्य दिखाकर दोनों परिवेशों को सामने रख दिया है। वहीं 'भारत दुर्दशा' पात्र वहीं बैठकर भारत के सर्वनाश का उपक्रम कर रहा था। भारतेन्दु ने इसी समय साहित्य की कमान संभाली और देखते ही देखते अपने युगीन साहित्य को नवजागरण की चेतना से भर दिया।

## 2. भारत दुर्दशा में नवजागरण के सूत्र

नवजागरण में प्रायः अतीत की महानता पर बल दिया जाता है ताकि वर्तमान में निरुत्साहित समाज को प्रेरणा देकर उद्बुद्ध किया जा सके। इस नाटक में भी अतीत के प्रति रोमानियत भरा नजारा दिखता है –

**सबके पहिले जेनी ईश्वर....**

**(पहला और छठा अंक)**

नवजागरण चेतना का दूसरा अनिवार्य पक्ष होता है – अपनी वर्तमान दुर्दशा के प्रति चिंता का भाव। हम दूसरी संस्कृति की तुलना में या अतीत की तुलना में बहुत पिछड़े हैं और यही भाव बदलाव की पृष्ठभूमि तैयार करता है।

**हा हा भारत दुर्दशा न देखी जाए...**

नवजागरण की चेतना समाज को यह समझने के लिए भी बाध्य करती है कि उसके पिछड़ेपन के क्या कारण थे। कारणों की यह खोज किसी दूसरे पर ठीकरा फोड़ने के लिए नहीं होती है। भारतेन्दु ने इस नाटक में भारत की दुर्दशा के सभी कारणों विशेषतः आंतरिक कारणों का खुलासा किया है, जैसे धर्म अज्ञान, जाति की बात। भारतेन्दु जी ने उन शक्तियों (फूट, असतो, यथार्थपरता, हठ, आलस्य आदि) का उल्लेख किया है, जिनके द्वारा भारत का सर्वनाश हुआ और जो वर्तमान में भी भारत पर हावी है।

नवजागरण चेतना में यह भी महत्वपूर्ण होता है कि दूसरी संस्कृति के अच्छे पक्षों को अपनाया जाए। भारतेन्दु सजग हैं कि हमारा समाज अंग्रेजों का अंधानुकरण न करने लगे किंतु यह अवश्य चाहते हैं कि उनकी आधुनिक शिक्षा व्यवस्था से सीख ले।

**देखो विद्या का सूर्य पश्चिम से उदय...**

नवजागरण का एक महत्वपूर्ण पक्ष होता है कि लेखक अपने समाज को बेहतर बनाने की युक्तियाँ सोचता और प्रस्तुत करता है। यद्यपि भारतेन्दु ने नाटक का ट्रेजिक अंत किया है, किंतु बीच में पहले देशी के माध्यम से यह संकेत जरूर दे दिया है कि भारतीय समाज के विकास का सही रास्ता क्या है।

## हाय, कोई यह नहीं कहता...

भारतेन्दु ने अन्यत्र भी अपनी एक कविता में ऐसा ही संकेत दिया है।

जानि सकै सब कुछ सब ही, विविध कला के भेद।

बनै वस्तु कल की इतै, मिरै दीनता खेद।

स्पष्ट है कि भारत दुर्दशा का मूल प्रतिपाद्य नवजागरण की चेतना ही है। भारतेन्दु अपने समय के कई सुधारकों जैसे राम मनोहर राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, रानाडे और विवेकानन्द से प्रभावित थे और उसी रास्ते पर चलते हुए नवजागरण आंदोलन में अपनी भूमिका निभाते को उत्सुक थे। अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि भारत दुर्दशा नवजागरण चेतना का सघन नाटक हो।

## संदर्भ ग्रंथ

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, "भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कृत भारत दुर्दशा", साहित्य सरोवर प्रकाशन, 2019.
2. विनय कुमार तिवारी, "भारत दुर्दशा मूल्यांकन और मूल्यांकन", समित प्रकाशन, 2021.
3. श्रीब्रज रत्नदास, "भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण, 1962.
4. भारतेन्दु ग्रन्थावली, पहला खण्ड (नाटक) संकलनकर्ता तथा संपादक, शिवप्रसाद मिश्र, प्रथम संस्करण।
5. भारतेन्दु ग्रन्थावली, दूसरा खण्ड (दूसरा भाग) संकलनकर्ता तथा संपादक ब्रजरत्नदास, प्रथम संस्करण।
6. भारतेन्दु ग्रन्थावली, तीसरा खण्ड, संकलनकर्ता तथा संपादक ब्रजरत्नदास, प्रथम संस्करण।